স্বদেশমন্ত্র

হে ভারত, এই পরানুবাদ, পরানুকরণ, পরমুখাপেক্ষা, এই দাসসুলভ দুর্বলতা, এই ঘৃণিত জঘন্য নিষ্ঠুরতা-এইমাত্র সম্বলে তুমি উচ্চাধিকার লাভ করিবে? এই লজ্জাকর কাপুরুষতাসহায়ে তুমি বীরভোগ্যা স্বাধীনতা লাভ করিবে? হে ভারত, ভুলিও না-তোমার নারীজাতির আদর্শ সীতা, সাবিত্রী, দময়ন্তী, ভুলিও না-তোমার উপাস্য উমানাথ সর্বত্যাগী শঙ্কর; ভুলিও না-তোমার বিবাহ, তোমার ধন, তোমার জীবন ইন্দ্রিয়সুখের-নিজের ব্যক্তিগত সুখের জন্যে নহে; ভুলিও না-তুমি জন্ম হইতেই "মায়ের" জন্য বলিপ্রদত্ত; ভুলিও না-তোমার সমাজ সে বিরাট মহামায়ার ছায়ামাত্র; ভুলিও না-নীচ জাতি, মূর্খ, দরিদ্র, অজ্ঞ, মুচি, মেথর তোমার রক্ত, তোমার ভাই। হে বীর, সাহস অবলম্বন কর, সদর্পে বল-আমি ভারতবাসী, ভারতবাসী আমার ভাই। বল-মূর্খ ভারতবাসী, দরিদ্র ভারতবাসী, ব্রাহ্মণ ভারতবাসী, চণ্ডাল ভারতবাসী আমার ভাই; তুমিও কটিমাত্র বস্ত্রাবৃত হইয়া, সদর্পে ডাকিয়া বল-ভারতবাসী আমার ভাই, ভারতবাসী আমার প্রাণ, ভারতের দেবদেবী আমার ঈশ্বর, ভারতের সমাজ আমার শিশুশয্যা, আমার যৌবনের উপবন, আমার বার্ধক্যের বারাণসী; বল ভাই-ভারতের মৃত্তিকা আমার স্বর্গ, ভারতের কল্যাণ আমার কল্যাণ; আর বল দিনরাত, "হে গৌরীনাথ, হে জগদম্বে, আমায় মনুষ্যত্ব দাও; মা, আমার দুর্বলতা কাপুরুষতা দূর কর, আমায় মানুষ কর।" - স্বামী বিবেকানন্দ

স্বদেশমন্ত্র

ऐ भारत! क्या दूसरों की ही हाँ में हाँ मिलाकर, दुसरो की ही नकल कर, परमुखापेक्षी होकर इन दासों की सी दुर्बलता, इस घृणित, जघन्य निष्ठुरता से ही तुम बडे बडे अधिकार प्राप्त करोगे? क्या इसी लज्जास्पद कापुरूषता से तुम वीरभोग्या स्वाधीनता प्राप्त करोगे? ऐ भारत! तुम मत भूलना कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री, दमयन्ती है; मत भूलना कि तुम्हारे उपास्य सर्वत्यागी उमानाथ शंकर है; मत भूलना कि तुम्हारा विवाह, धन और तुम्हारा जीवन इन्द्रिय-सुख के लिए-अपने व्यक्तिगत सुख के लिए-नही है; मत भूलना कि तुम जन्म से ही "माता" के लिए बलिस्वरूप रखे गये हो; मत भुलना कि तुम्हारा समाज उस विराट महामाया की छाया मात्र है; तुम मत भुलना कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार और मेहतर तुम्हारा रक्त और तुम्हारे भाई है। ऐ वीर! साहस का आश्रय लो। गर्व से बोलो कि मैं भारतवासी हुँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है, बोलो कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी ब्राह्मण भारतवासी, चण्डाल भारतवासी, सब मेरे भाई है; तुम भी कटिमात्र वस्त्रावृत होकर गर्व से पुकारकर कहो कि भारतवासी मेरा भाई है, भारतवासी मेरे प्राण है, भारत की देव-देवियाँ मेरे ईश्वर है, भारत का समाज मेरी शिशु-सज्जा, मेरे योवन का उपवन और मेरे वार्द्धक्य की वाराणसी है। भाइ, बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है, भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है, और रात-दिन कहते रहो कि "हे गौरीनाथ। हे जगदम्बे ! मुझे मनुष्यत्व दो; माँ, मेरी दूर्बलता और कापुरूषता दूर कर दो, मुझे मनुष्य बनाओ।। - स्वामी विवेकान्द

स्वदेशमन्त्रः

हे भारत! अयं परानुवादः, इदं परानुकरणम्, इयं परमुखापेक्षा, इयं दाससुलभा दुर्बलता, इयं घृणिता जधन्या निष्ठुरता - चेत्येतत् सर्वम् अवलम्ब्य त्वं समुच्चाधिकारं लप्स्यसे? अनेन लज्जाजनककापुरुषतासाहाय्येन त्वं वीरभोग्यां स्वतन्त्रतां लप्स्यसे? हे भारत! मा विस्मर-तव नारीजातेः आदर्शभूताः सीता सावित्री दमयन्ती च। मा विस्मर-तव आराध्यः उमानाथः सर्वत्यागी शङ्करः; मा विस्मर-तव विवाहः, तव वैभवं, तव जीवितम् इत्येतत् सर्वम् इन्द्रियसुखाय-न तु वैयक्तिकसुखाय; मा विस्मर-त्वं जन्मतः एव 'मात्रे' वलिरूपेण प्रदत्तः असि; मा विस्मर-तव समाजः तद्विराट्स्वरूपिण्याः महामायायाः छायामात्रम्: मा विस्मर-नीचा जातिः, मूर्खः, दरिद्रः, अज्ञः, चर्मकारः, मलनिस्सारकः तव रक्तम् तवैव भ्रातरः। हे वीर! साहसम् अवलम्बस्य, सदर्पम् उच्यताम् अहं भारतवासी, भारतवासी मम भ्राता। उद्घोष्यताम् मूर्खः भारतवासी, दरिद्रः भारतवासी, ब्राह्मणः भारतवासी, चण्डालः भारतवासी इत्येते सर्वे ममैव भ्रातरः; त्वं कटिमात्रम् वस्त्रावृतः सन्, सदर्पम् आह्वय- भारतवासी मम भ्राता, भारतवासी मम जीवनम्, भारतस्य देवताः मम ईश्वरः, भारतस्य समाजः मम शैशवशय्या, मम यौवनोपवनम्, मम वार्धक्यस्य वाराणसी; उच्यतां भ्रातः - भारतस्य मृक्किा मत्कृते स्वर्गसमाना ॥ भारतस्य कल्याणं ममैव कल्याणं किञ्च अहर्निशम् इदमपि उच्यताम्, 'हे गौरीनाथ! हे जगदम्बे ! महां मनुष्यत्वं देहि, विवेकं देहि मातः मयि विद्यमानां दुर्बलतां कापुरुषतां च दूरीकुरु, मां मानुषं कारय।' - स्वामी विवेकान्दः

Swadesh Mantra

O Bharat! With this mere echoing of others, with this base imitation of others, with this dependence on others,..... wouldst thou, with these provisions only, scale the highest pinnacle of civilisation and greatness? Wouldst thou attain, by means of thy disgraceful cowardice, that freedom deserved only by the brave and the heroic? O Bharat! Forget not that the ideal of thy womanhood is Sita, Savitri, Damayanti; forget not that the God thou worshippest is the great Ascetic of ascetics the all-renouncing Shankara, the Lord of Uma; forget not that thy marriage, thy wealth, thy life are not for sense-pleasure, are not for thy individual personal happiness; forget not that thou art born as a sacrifice to the Mother's altar, forget not that thy social order is but the reflex of the Infinite Universal Motherhood; forget not that the lower classes, the ignorant, the poor, the illiterate, the cobbler, the sweeper, are thy flesh and blood, are thy brothers. Thou brave one, be bold, take courage, be proud that thou art a Bharatvasi and proudly proclaim, "I am a Bharatvasi, every Bharatvasi is my brother." Say, "The ignorant Bharatvasi, the poor and destitute Bharatvasi, the Brahmin Bharatvasi, the Pariah Bharatvasi, is my brother". Thou, too, clad with but a rag round thy loins, proudly proclaim at the top of thy voice: "The Bharatvasi is my brother, the Bharatiya is my life, Bharat's gods and goddesses are my God. Bharat's society is the cradle of my infancy, the pleasure-garden of my youth, the sacred heaven, the Varanasi of my old age". Brother, say: "The soil of Bharat is my highest heaven, the good of Bharat is my good", and repeat and pray day and night, "O Thou Lord of Gouri, O Thou Mother of the Universe, vouchsafe manliness unto me! O Thou Mother of Strength, take away my weakness, take away my unmanliness, and make me a Man!". -Swami Vivekananda